

भा.कृ.अनु.प.-भारतीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान, खंडवा रोड, इंदौर- 452001

फाइल न/प्रेस और पब्लिसिटी /प्रेस विज्ञप्ति :.2021/31 दिनांक :17.09.2021

प्रेस विज्ञप्ति

डॉ. संजीव गुप्ता, सहायक महानिदेशक, (तिलहन और दलहन), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (भा.कृ.अनु.प.) नई दिल्ली ने आज 17 सितंबर, 2021 को भा.कृ.अनु.प.-भारतीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान, इंदौर का दौरा किया तथा और इस खरीफ मौसम के दौरान लगाये जा रहे विभिन्न प्रयोगों और अनुसंधान परीक्षणों की प्रगति की समीक्षा की।

डॉ. नीता खांडेकर, कार्यवाहक निदेशक, भा.कृ.अनु.प.- भा. सो. अनु. सं., इंदौर ने डॉ संजीव गुप्ता का स्वागत करते हुए हाल के वर्षों में संस्थान द्वारा की गई प्रमुख उपलब्धियों और प्रमुख सोयाबीन उत्पादक राज्यों में प्रतिकूल मौसम की स्थिति के कारण बदले हुए जलवायु परिदृश्य में इसकी तैयारियों को संक्षेप में प्रस्तुत किया। संस्थान पहली बार देश के विभिन्न सोयाबीन उत्पादक राज्यों के लिए उपयुक्त एक वर्ष में चौबीस किस्मों की पहचान, विमोचन और अधिसूचना में सफल रहा है। इनमें से मध्य प्रदेश के लिए उपयुक्त आठ किस्में और खाद्य ग्रेड वर्ण की विशिष्ट सोयाबीन की किस्में भी हैं

डॉ गुप्ता ने संस्थान के अनुसंधान-सह-प्रयोगात्मक ब्लॉक का भी संक्षिप्त दौरा किया और संबंधित वैज्ञानिकों के साथ इस मौसम में किए जा रहे अनुसंधान कार्यक्रमों की प्रगति के बारे में बातचीत की। इस दौरे में उपज और अन्य गुणवत्ता मानकों में सुधार के लिए क्रॉसिंग ब्लॉक, अक्षांश में उपयुक्तता के लिए स्वदेशी और विदेशी जन्नद्रव्य, डी.यू.एस., न्यूक्लियस और ब्रीडर बीज उत्पादन, खाद्य ग्रेड और विशेष सोयाबीन किस्मों सहित उन्नत किस्म/स्टेशन परीक्षण, कृषि व्यवसाय ऊष्मायन केंद्र शामिल थे। संस्थान के प्रदर्शन खंड में जलवायु परिवर्तन के प्रतिकूल प्रभाव को कम करने के लिए अनुशंसित नई विधियों पर प्रकाश डाला गया।

संस्थान के कर्मचारियों के साथ संक्षिप्त संबोधन में डॉ गुप्ता ने कहा कि जल भराव एवं जलवायु सहिष्णु, उच्च ओलिक एसिड बनाने वाली और प्रमुख रोगों जैसे कि येलो मोज़ेक वायरस (YMV), एन्थ्रेकनोज और चारकोल रोट के लिए प्रतिरोधी किस्मों के विकास के लिए अधिक जर्मप्लाज्म की पहचान करने की सख्त आवश्यकता पर जोर दिया। यह रोग विगत कुछ वर्षों में देश के सोयाबीन उत्पादन पर बुरा प्रभाव डाल रहे थे। इसके साथ ही उन्होंने वर्तमान में चल रही शोध गतिविधि में एंटी डिहिसेंस (नॉन सीड शैटरिंग), एंटी-हार्वेस्ट स्प्राउटिंग (एंटी-विविपरी) आदि गुणों को शामिल करने पर

भी सभा का ध्यान आकर्षित किया। उन्होंने सोयाबीन में संसाधन संरक्षण प्रौद्योगिकियों पर ओर काम करने पर की आवश्यकता जताई।

परिचर्चा के अंत में डॉ. नीता खांडेकर ने प्रेम के प्रतीक के रूप में स्मृति चिन्ह और संस्थान में तैयार सोया आधारित खाद्य उत्पाद से भरी टोकरी डॉ. गुप्ता को भेंट की।